ISSN:2583-8849



महेश पंचाल 'माही'
बाँसवाड़ा, राजस्थान

सत्य सदा कहता तुम्हें, सुन लो बारम्बार।
एक झूठ की कोख से, जन्में झूठ हजार।।

सहमा चूल्हा सेंकता, भूख सने जब ख़्वाब।
आँतों से रिसने लगा, पीड़ा का तेजाब।।

बादल रोते देख कर, हँसने लगे किसान।
मिट्टी पुलकित हो गयी, नदियाँ हुई जवान।।

स्वच्छ पवन, पानी मिले, मिलती शीतल छाँव ।
खेत, नदी, गोधूल से , लगते सुंदर गाँव ।।

थोथे दंभी खोखले, चेले चमचे चार।
नेता, अफसर पालते, करने जय जयकार।।

सत्ता में होते नहीं, द्रोही नेता चंद।
झंडा मेरे देश का, होता और बुलंद।।

धूप सुहानी यदि लगे, स्वेद लगे यदि इत्र।
उपवन सा महका रहे, उसका जीवन चित्र।।

रोटी रुपया और सुख, बाँट दिया निःस्वार्थ।
दुःख दर्द बाँटा नहीं, रखा पिता ने स्वार्थ।।

छल से हारा सत्य अरु, धन से हारा न्याय।
खड़े महल उसके यहाँ, जिसकी कोड़ी आय।।

अद्भुत अनुपम अमित छवि, अभिनव अतुलित नाम ।
सरल सुरम्य सुरूप हैं , सुभग सुभट श्री राम ।।

चार पढ़ी क्या पोथियाँ, शीश चढ़ा अभिमान।
बाँट रहे कुछ लोग हैं, तक्षशिला का ज्ञान।।

'अ' से लिया अधिकार में, रोटी वस्त्र मकान।
'क' से करे कर्तव्य भी, मानव वही महान।।

मेघों ने चुकता किया , किस्तों में जब नीर।
सागर से तब जा मिली, सरिता सकल अधीर।।

कृष्ण प्रेम में बावरी, किया सहज विष पान।
मीरा को भी क्या भला, भले बुरे का भान।।

रेशम जैसा हो गया, मौसम का जब हाल।
फैलाया तब धूप ने, मखमल जैसा जाल।।